भारत सरकार

आयुष मंत्रालय

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न सं. 3439

08 अगस्त, 2025 को पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर

समग्र स्वास्थ्य सेवा के लिए आयुर्वेद का संवर्धन

3439. प्रो. सौगत राय:

क्या आयुष मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या दुसाध्य रोगों को रोकने और प्रबंधित करने, मानसिक स्वास्थ्य का समर्थन करने और मातृ और बाल स्वास्थ्य के साथ-साथ संचारी रोगों के लिए समग्र देखभाल प्रदान करने की क्षमता के कारण आयुर्वेद का संवर्धन सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण है;

(ख) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और देश में आयुर्वेद को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा अब तक राज्य-वार क्या कदम उठाए गए हैं;

(ग) क्या जीवनशैली और आहार प्रबंधन पर आयुर्वेद का जोर समग्र और स्थायी स्वास्थ्य देखभाल समाधानों की बढ़ती आवश्यकता के अनुरूप है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(घ) यदि हाँ, तो क्या सरकार का विद्यालयों के पाठ्यक्रम में बुनियादी आयुर्वेदिक सिद्धांतों को शामिल करने का कोई प्रस्ताव है और यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ङ) क्या सरकार का योग, ध्यान और हर्बल उपचार जैसी प्रथाओं को शामिल करते हुए मानसिक स्वास्थ्य के लिए एक समग्र दृष्टिकोण हेतु आयुर्वेद को प्रोत्साहित करने का कोई प्रस्ताव है; और

(च) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और देश में आयुर्वेद के कल्याण के लिए सरकार द्वारा क्या कदम उठाए गए हैं?

<u>उत्तर</u>

आयुष मंत्रालय के राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
(श्री प्रतापराव जाधव)

(क) एवं (ख): जी हां, आयुष स्वास्थ्य सेवा पद्धति के प्रचार और प्रसार संबंधी अधिदेश को पूरा करने के उद्देश्य से, मंत्रालय आयुष में सूचना, शिक्षा और संचार (आईईसी) के संवर्धन हेतु एक केंद्रीय क्षेत्रीय योजना का कार्यान्वयन करता है। इस योजना के अंतर्गत, मंत्रालय राष्ट्रीय/राज्य स्तरीय आरोग्य मेले, योग फेस्ट/उत्सव, आयुर्वेद पर्व आदि आयोजित करता है, आयुष पद्धति के महत्वपूर्ण दिवस मनाता है, स्वास्थ्य फेयर/मेलों, प्रदर्शनियों आदि में भाग लेता है, स्वास्थ्य देखभाल और उपचार की आयुष पद्धति के संबंध में नागरिकों में जागरूकता उत्पन्न करने के लिए सेमिनार, कार्यशालाएँ, सम्मेलन आयोजित करने और मल्टीमीडिया अभियान चलाने हेतु वित्तीय सहायता प्रदान करता है।

इसके अलावा, मंत्रालय देश में आयुष पद्धति के विकास एवं संवर्धन हेतु राज्य/संघ राज्य क्षेत्र सरकारों के माध्यम से राष्ट्रीय आयुष मिशन (एनएएम) की केंद्रीय प्रायोजित योजना को क्रियान्वित कर रहा है और उनकी राज्य वार्षिक कार्य योजनाओं (एसएएपी) में प्राप्त प्रस्तावों के अनुसार उन्हें वित्तीय सहायता प्रदान कर रहा है। राज्य/संघ राज्य क्षेत्र सरकारें एनएएम के दिशानिर्देशों के अनुसार एसएएपी के माध्यम से प्रस्ताव प्रस्तुत करके वित्तीय सहायता प्राप्त कर सकती हैं।

इसके अतिरिक्त, आयुर्वेद को बढ़ावा देने, समग्र स्वास्थ्य सेवा के प्रयोजन हेतु आयुष मंत्रालय ने 01 (एक) आयुर्वेद अनुसंधान परिषद और 07 (सात) राष्ट्रीय संस्थान स्थापित किए हैं, जिनका विवरण **संलग्नक-I** में दिया गया है। ये परिषदें/संस्थान अपने सहायक संस्थानों/इकाइयों/केंद्रों के साथ सामान्य बाह्य रोगी विभाग (ओपीडी), प्रजनन एवं बाल स्वास्थ्य (आरसीएच) ओपीडी, वृद्धावस्था ओपीडी, गैर-संचारी रोग (एनसीडी) क्लिनिक आदि के माध्यम से उपचार प्रदान कर रहे हैं और आयुर्वेद को बढ़ावा देने के लिए जागरूकता गतिविधियों में भी लगे हुए हैं। आयुष मंत्रालय के अंतर्गत अनुसंधान परिषद और राष्ट्रीय संस्थानों द्वारा आयुर्वेद को बढ़ावा देने संबंधी गतिविधियों का विवरण **संलग्नक-II** में दिया गया है।

(ग): जी हाँ, आयुष मंत्रालय के अंतर्गत राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान जीवनशैली और आहार प्रबंधन पर ज़ोर देते हैं, जो समग्र और टिकाऊ स्वास्थ्य सेवा समाधानों की बढ़ती वैश्विक आवश्यकताओं के साथ निम्नलिखित रूप से पूरी तरह मेल खाता है:-

• समग्र और स्थायी स्वास्थ्य देखभाल सेवा के साथ तालमेल।

• व्यक्तिगत जीवनशैली नियम: आयुर्वेद व्यक्तिगत दिनचर्या, ऋतुचर्या और संतुलित जीवन को बढ़ावा देता है।

• एक पौष्टिक आहार (पथ्य आहार) रोग की रोकथाम और प्रबंधन दोनों के लिए महत्वपूर्ण है।

• दैनिक आदतों, तनाव प्रबंधन और विषहरण (जैसे, पंचकर्म) के माध्यम से शीघ्र उपचार पर ज़ोर देता है।

• योग, ध्यान और सत्ववज्य चिकित्सा, जिन्हें तनाव-संबंधी विकारों के प्रबंधन में तेज़ी से मान्यता मिल रही है।

(घ) स्कूल पाठ्यक्रम में आयुर्वेद के मूल सिद्धांतों को शामिल करने का कोई प्रस्ताव विचाराधीन नहीं है।

(ङ) और (च) जी हाँ, आयुष स्वास्थ्य सेवा पद्धति के प्रचार-प्रसार के अधिदेश को पूरा करने के उद्देश्य से, मंत्रालय आयुष में सूचना, शिक्षा और संचार (आईईसी) के प्रचार-प्रसार हेतु एक केंद्रीय क्षेत्रीय योजना का कार्यान्वयन करता है। इस योजना के अंतर्गत, मंत्रालय राष्ट्रीय/राज्य स्तर पर आरोग्य मेले, योग फेस्ट/उत्सव, आयुर्वेद पर्व आयोजित करता है, आयुष पद्धति के महत्वपूर्ण दिवस मनाता है, स्वास्थ्य मेलों/प्रदर्शनियों आदि में भाग लेता है, सेमिनार, कार्यशालाओं, सम्मेलनों के आयोजन हेतु वित्तीय सहायता प्रदान करता है और स्वास्थ्य सेवा एवं उपचार की आयुष पद्धति के संबंध में नागरिकों में जागरूकता उत्पन्न करने हेतु मल्टीमीडिया अभियान आदि चलाता है।

इसके अलावा, समग्र स्वास्थ्य सेवा हेतु आयुर्वेद को बढ़ावा देने के उद्देश्य से, आयुष मंत्रालय ने 01 (एक) अनुसंधान परिषद और 07 (सात) राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान स्थापित किए हैं, जिनका विवरण **संलग्नक-I** में दिया गया है। ये परिषदें/संस्थान अपने सहायक संस्थानों/इकाइयों/केंद्रों के साथ मिलकर सामान्य बाह्य रोगी विभाग (ओपीडी), प्रजनन एवं शिशु स्वास्थ्य (आरसीएच) ओपीडी, वृद्धावस्था ओपीडी, गैर-संचारी रोग (एनसीडी) क्लिनिक आदि के माध्यम से उपचार प्रदान कर रहे हैं और आयुर्वेद को बढ़ावा देने के लिए जागरूकता गतिविधियों में भी संलग्न हैं।

****

संलग्नक-I

<u>आयुष मंत्रालय के अंतर्गत कार्यरत अनुसंधान परिषदों और राष्ट्रीय संस्थानों का विवरण</u>

अनुसंधान परिषदें:

क्र. सं.	**अनुसंधान परिषद का नाम**
1	केंद्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद (सीसीआरएएस)

राष्ट्रीय संस्थान:

क्र. सं.	**संस्थान का नाम**
1	राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान (एनआईए) • जयपुर • पंचकुला (सेटलाइट केंद्र) rrfvv
2	अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान (एआईआईए) • नई दिल्ली • गोवा (सेटलाइट केंद्र)
3	राष्ट्रीय आयुर्वेद विद्यापीठ (आरएवी), दिल्ली
4	आयुर्वेद शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान (आईटीआरए), जामनगर
5	राष्ट्रीय सोवा रिग्पा संस्थान (एनआईएसआर), लेह
6	पूर्वोत्तर आयुर्वेद एवं होम्योपैथी संस्थान (एनईआईएएच), शिलांग
7	पूर्वोत्तर आयुर्वेद और लोक चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (एनईआईएएफएमआर), पासीघाट

संलग्नक-II

<u>अनुसंधान परिषद और राष्ट्रीय संस्थानों द्वारा आयुर्वेद को बढ़ावा देने हेतु गतिविधियाँ</u>

(1) केंद्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद (सीसीआरएएस) ने आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति में वैज्ञानिक अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए कई पहल की हैं। सीसीआरएएस, 30 परिधीय संस्थानों/केंद्रों के एक राष्ट्रव्यापी नेटवर्क के माध्यम से कार्य करता है और वैज्ञानिक आधार पर आयुर्वेद अनुसंधान को क्रियान्वित करने और आगे बढ़ाने के लिए विभिन्न विश्वविद्यालयों, अस्पतालों और अनुसंधान निकायों के साथ सहयोग करता है।

आयुष मंत्रालय के अंतर्गत आयुर्वेद में अनुसंधान के लिए शीर्ष संगठन के रूप में, सीसीआरएएस ने आयुर्वेद के क्षेत्र में वैज्ञानिक सत्यापन, साक्ष्य-आधारित अभ्यास और क्षमता निर्माण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कई अनुसंधान और संबद्ध पहल शुरू की हैं। इन प्रयासों का उद्देश्य अनुसंधान पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करना, मुख्यधारा की स्वास्थ्य सेवा के साथ एकीकरण को बढ़ाना और वैज्ञानिक परिणामों का व्यापक प्रसार सुनिश्चित करना है।

परिषद इन विषयगत क्षेत्रों में संरचित अनुसंधान करती है:

• नैदानिक अनुसंधान: विभिन्न रोगों के लिए आयुर्वेदिक उपचार प्रोटोकॉल पर साक्ष्य सृजन।
• औषधि मानकीकरण: आयुर्वेदिक औषधियों के लिए भेषजसंहिता मानकों और मोनोग्राफ का विकास।
• औषधीय अनुसंधान: आयुर्वेदिक योगों का पूर्व-नैदानिक और सुरक्षा मूल्यांकन।
• औषधीय पादप अनुसंधान: जिसमें औषधीय-नृजातीय वानस्पतिक सर्वेक्षण, औषधीय अध्ययन और संवर्धन प्रोटोकॉल शामिल हैं।
• जन स्वास्थ्य अनुसंधान: रोग निवारण और स्वास्थ्य संवर्धन के लिए समुदाय-आधारित हस्तक्षेप।
• साहित्यिक अनुसंधान और प्रलेखन: शास्त्रीय ग्रंथों की आलोचनात्मक समीक्षा, संकलन, अनुवाद और डिजिटलीकरण।
• मौलिक अनुसंधान: समकालीन संदर्भ में आयुर्वेद की मूल अवधारणाओं पर साक्ष्य आधार तैयार करना।
• औषधि अनुसंधान: आयुर्वेदिक औषधियों के शास्त्रीय और नवीन खुराक रूपों के लिए मानक संचालन प्रक्रिया (एसओपी) के विकास हेतु अनुसंधान अध्ययन करना।

सीसीआरएएस अपने परिधीय संस्थानों के नेटवर्क के माध्यम से आंतरिक अनुसंधान करता है और प्रतिष्ठित चिकित्सा महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों और अस्पतालों के साथ सहयोगात्मक अध्ययन करता है। इन पहलों का उद्देश्य आयुर्वेदिक हस्तक्षेपों को वैज्ञानिक रूप से मान्य करना, सुदृढ़ नैदानिक साक्ष्य उत्पन्न करना और मुख्यधारा की स्वास्थ्य सेवा और अनुसंधान पारिस्थितिकी पद्धतियों के साथ आयुर्वेद के एकीकरण को सुदृढ़ करने के लिए संस्थागत संबंध स्थापित करना है।

सीसीआरएएस तीन सूचीबद्ध पत्रिकाएँ प्रकाशित करता है: जर्नल ऑफ रिसर्च इन आयुर्वेदिक साइंसेज (जेआरएएस), जर्नल ऑफ ड्रग रिसर्च इन आयुर्वेदिक साइंसेज (जेडीआरएएस), और जर्नल ऑफ इंडियन मेडिकल हेरिटेज (जेआईएमएच)।

सीसीआरएएस द्वारा एक त्रैमासिक बुलेटिन भी प्रकाशित किया जाता है ताकि निष्कर्षों को आम भाषा में प्रसारित किया जा सके। जन जागरूकता को निम्नलिखित माध्यमों से बढ़ावा दिया जाता है: राष्ट्रीय/राज्य स्तरीय आरोग्य मेलों, स्वास्थ्य शिविरों और आयुर्वेद प्रदर्शनियों, प्रदर्शनियों और मीडिया अभियानों (प्रिंट, डिजिटल और इलेक्ट्रॉनिक) में भागीदारी और टीएचसीआरपी (जनजातीय स्वास्थ्य देखभाल अनुसंधान कार्यक्रम) और एससीएसपी (अनुसूचित जाति उप-योजना) के माध्यम से सामुदायिक पहुँच। सीसीआरएएस संस्थान नैदानिक देखभाल केंद्रों के रूप में भी कार्य करते हैं, जहाँ नैदानिक अध्ययन और नियमित देखभाल के तहत प्रतिवर्ष हजारों रोगियों को आयुर्वेदिक उपचार प्रदान किया जाता है।

सीसीआरएएस की अनुसंधान क्षमता निर्माण पहल: आयुर्वेद के वैज्ञानिक आधार को मजबूत करने के लिए, सीसीआरएएस विभिन्न पहलों के माध्यम से अनुसंधान क्षमता निर्माण को सक्रिय रूप से बढ़ावा देता है। इनमें शामिल हैं:

• फेलोशिप कार्यक्रम (आयुर्वेद में पीएचडी फेलोशिप)।
• सीसीआरएएस अधिकारियों के लिए कौशल विकास कार्यशालाएँ/सेमिनार आदि
• अल्पकालिक प्रशिक्षण कार्यक्रम - जैसे पंचकर्म चिकित्सा पर प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम (सीसीपीटी), सीसीआरएएस संस्थानों द्वारा समन्वित मर्म प्रशिक्षण कार्यक्रम
• मानव संसाधन विकास पहल जैसे स्पार्क (स्नातक आयुर्वेद छात्रों के लिए), पीजी-स्टार (स्नातकोत्तर छात्रों के लिए)
• आयुर्वेद अनुसंधान पद्धति और सांख्यिकी प्रशिक्षण के लिए सीसीआरएएस कार्यक्रम (एआरएमएस)
एनएबीएच और एनएबीएल मान्यता:
• 12 सीसीआरएएस अस्पतालों ने एनएबीएच मान्यता प्राप्त की है, जबकि 08 अस्पतालों ने प्रवेश स्तर का एनएबीएच प्रमाणन प्राप्त किया है।
• 16 चिकित्सा प्रयोगशालाओं ने एनएबीएल-एम(ईएल)टी मान्यता प्राप्त की है
• 05 परीक्षण एवं अंशांकन प्रयोगशालाओं को परीक्षण एवं अंशांकन श्रेणी (आईएसओ-आईईसी 17025:2017) के अंतर्गत मान्यता प्राप्त है।

(2) पूर्वोत्तर आयुर्वेद एवं होम्योपैथी संस्थान (एनईआईएएच) ने समग्र स्वास्थ्य सेवा के लिए आयुर्वेद को बढ़ावा देने के लिए कई कदम उठाए हैं। इस संबंध में, संस्थान नियमित रूप से संस्थान के अस्पतालों (ओपीडी और आईपीडी दोनों) में मुफ्त परामर्श देता है और गांवों, स्कूलों, सरकारी विभागों, सैन्य कर्मियों और सामुदायिक स्तर पर मुफ्त चिकित्सा एवं जागरूकता शिविर आयोजित करता है। एनईआईएएच ने ऑल इंडिया रेडियो, शिलांग में अंग्रेजी, हिंदी और क्षेत्रीय भाषा (खासी) में राष्ट्रीय सेमिनार/कार्यशालाएं, पैनल चर्चा और "डॉक्टर से मिलें" कार्यक्रम का आयोजन किया और दूरदर्शन केंद्र, शिलांग आदि में आयुर्वेद पर टीवी टॉक शो भी आयोजित किए। संस्थान ने प्रधानमंत्री जनजाति न्याय महा अभियान (पीएम-जनमन) कार्यक्रमों के तहत स्वास्थ्य शिविर आयोजित किए। संस्थान बैचलर ऑफ आयुर्वेदिक मेडिसिन एंड सर्जरी (बीएएमएस) और बैचलर ऑफ होम्योपैथिक मेडिसिन एंड सर्जरी (बीएचएमएस) पड़ोसी राज्यों के चिकित्सा अधिकारियों (आयुर्वेद) को पंचकर्म चिकित्सा प्रशिक्षण भी एनईआईएएच द्वारा दिया जाता है।

(3) आयुर्वेद शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान (आईटीआरए), जामनगर देश में आयुर्वेद के प्रचार-प्रसार के लिए नियमित रूप से विशेषकर अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस, पोषण अभियान, आयुर्वेद दिवस और महिला दिवस तथा टीबी उन्मूलन के अवसर पर विभिन्न जागरूकता कार्यक्रम आयोजित कर रहा है।

(4) अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान (एआईआईए), नई दिल्ली, दीर्घकालिक रोगों के प्रबंधन, मानसिक स्वास्थ्य, मातृ एवं शिशु देखभाल, और संचारी रोगों के प्रकोप के दौरान सहायता हेतु अपने समग्र स्वास्थ्य

देखभाल दृष्टिकोण के माध्यम से जन स्वास्थ्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह मधुमेह, गठिया और उच्च रक्तचाप जैसी दीर्घकालिक बीमारियों के प्रबंधन के लिए आहार, जीवनशैली में बदलाव, पंचकर्म और हर्बल औषधियों का उपयोग करते हुए, व्यक्तिगत संरचना (प्रकृति) के आधार पर व्यक्तिगत उपचार पर जोर देता है। मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में, यह भावनात्मक और तंत्रिका संबंधी संतुलन के लिए सत्ववज्य चिकित्सा (मनोचिकित्सा), योग, ध्यान और रसायन जैसी चिकित्सा पद्धतियों को शामिल करता है। प्रसूति तंत्र और कौमारभृत्य जैसी आयुर्वेदिक विधाएँ, प्रसवपूर्व देखभाल और प्रसवोत्तर स्वास्थ्य लाभ सहित, मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य के लिए विशेष हस्तक्षेप प्रदान करती हैं। आयुर्वेद, संक्रामक प्रकोपों के दौरान प्रतिरक्षा-वर्धक चिकित्सा, विषहरण प्रथाओं और निवारक मार्गदर्शन के माध्यम से भी योगदान देता है, जैसा कि कोविड-19 प्रतिक्रिया के दौरान प्रदर्शित हुआ है।

अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान (एआईआईए) ने आयुर्वेद को बढ़ावा देने और मुख्यधारा की स्वास्थ्य सेवा में एकीकृत करने के लिए कई कदम उठाए हैं। यह पंचकर्म, स्वस्थवृत्त (आहार/जीवनशैली) और चिकित्सीय योग द्वारा समर्थित, दीर्घकालिक, मानसिक, मातृ एवं बाल चिकित्सा स्थितियों के लिए विशिष्ट ओपीडी और आईपीडी सेवाएँ प्रदान करता है। एआईआईए व्याख्यानों, स्वास्थ्य शिविरों, आयु संवाद कार्यक्रमों के माध्यम से जन स्वास्थ्य अभियान भी चलाता है और नैदानिक साक्ष्यों का दस्तावेजीकरण करने के लिए आयुकेयर प्रकाशित करता है। इसकी समर्पित मानसिक स्वास्थ्य सेवाएँ आयुर्वेदिक उपचारों का उपयोग करके मनोरोग स्थितियों का प्रबंधन करती हैं। इसके अलावा, एआईआईए "देश का प्रकृति परीक्षण अभियान" जैसी राष्ट्रीय पहलों में सक्रिय रूप से भाग लेता है, जिसके तहत प्रकृति (शारीरिक संरचना) पर आधारित निवारक देखभाल को बढ़ावा देने के लिए 4.7 लाख से अधिक लोगों की जाँच की गई।

(5) पूर्वोत्तर आयुर्वेद एवं लोक चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (एनईआईएएफएमआर) नियमित रूप से स्वास्थ्य शिविर, राष्ट्रीय कार्यक्रम जैसी विभिन्न गतिविधियों का आयोजन कर रहा है।